Tender Heart High School, Sector- 33-B, Chandigarh.

कक्षा- दसवीं

विषय - हिन्दी साहित्य
शिक्षिका - श्रीमती कल्पना शर्मा

पुस्तक : एकांकी संचय

पाठ - 6 दीपदान (एकांकी) लेखक - डॉ० रामकुमार वर्मा

सुप्रभात प्यारे बच्चो !

आज हम कक्षा दसवीं की हिन्दी साहित्य की पाठ्य पुस्तक 'एकांकी संचय' की पृष्ठ संख्या 82 पर दिए पाठ-6 'दीपदान' नामक एकांकी का अध्ययन करेंगे।

बच्चो ! आज हम 'दीपदान' एकांकी के शेष भाग का आरंभ करने जा रहे हैं, इसलिए आप सभी अपनी-अपनी पुस्तक एवं उत्तर-पुस्तिका भी निकाल लें और पढ़ने के लिए तैयार हो जाएँ। पाठ के मध्य मेरे द्वारा पूछे गए प्रश्नों के उत्तर आप तभी दे पाएँगे यदि आप अपना ध्यान इस ओर ही केन्द्रित रखेंगे। आशा करती हूँ कि अब आप पढ़ने के लिए पूर्ण रूप से तैयार हैं।

बच्चो ! एकांकी को आगे पढ़ने से पहले आइए, यह जान लेते हैं कि पीछे हमने क्या पढ़ा है। 'दीपदान' एकांकी डॉ० रामकुमार वर्मा द्वारा रचित एक प्रसिद्ध एकांकी है। इस एकांकी में उन्होंने बलिदान और त्याग की मूर्ति पन्ना धाय की ऐतिहासिक गौरव गाथा का वर्णन

किया हैं। चित्तौड़ के राणा संग्राम की मृत्यु के पश्चात् चित्तौड़ के वास्तविक उत्तराधिकारी का प्रश्न उठा। वास्तव में यह राज्य राणा संग्राम के पुत्र कुँवर उदयसिंह को मिलना चाहिए था परन्तु उदय सिंह अल्पवयस्क थे। अतः महाराणा साँगा के भाई पृथ्वीराज के दासी पुत्र बनवीर को राज्य की देखभाल के लिए नियुक्त किया गया। बनवीर बहुत दुष्ट था। वह राज्य पर अपना अधिकार करना चाहता था इसलिए उसने उदयसिंह की हत्या का षड़यन्त्र रचा और मयूरपक्ष कुण्ड में दीपदान के उत्सव का आयोजन किया। पन्ना धाय, उदयसिंह की धाय माँ थी। उसे बनवीर के षड़यन्त्र का पता चल गया। अतः कुँवर उदय सिंह के दीपदान उत्सव में जाने की ज़िद करने पर भी उसने कुँवर को जाने नहीं दिया। इस कारण वे रूठकर ज़मीन पर ही सो गए। उसी समय रावल सरूप सिंह की लड़की सोना प्रवेश करती है। पन्ना उसे चुप रहने को कहती है क्योंकि कुँवर अभी सोए हैं। सोना कहती है कि तुलजा भवानी के सामने नाचना कोई बुरी बात नहीं है। फिर वह कहती है कि तुमने अपने कर्तव्य के आगे अपने मातृत्व को ही भुला दिया है। वह बताती है कि बनवीर उनकी तुलना अरावली पर्वत से करते हैं। उनका मानना है कि पन्ना धाय ने कर्तव्यों के बोझ से स्वयं को जड़ बना दिया है। इसलिए सभी बंधनों को तोड़ते हुए तुम्हें नदी के समान बहना चाहिए। पन्ना धाय सोना से कहती है कि बनवीर के अनुग्रह ने तुम्हें पागल बना दिया है। इस पर सोना तर्क देती हुई कहती है कि सभी किसी न किसी आदत के कारण पागल होते हैं। कोई किसी का स्नेह पाकर पागल होता है; कोई किसी की कृपा पाकर और कोई अपने शौक के

पागल है और यह पागलपन कभी खत्म नहीं होता बल्कि बढ़ता ही रहता है। वह (सोना) कहती है कि तुम धाय माँ थी और केवल धाय माँ ही रहोगी। पन्ना इसे अपने भाग्य की बात कहती है किन्तु सोना उन्हें कहती है कि भाग्य मनुष्य स्वयं निर्मित करता है। पन्ना सोना को समझाते हुए अति उत्साहित न होने और बनवीर के अनुग्रह से मुक्त होकर स्वतन्त्र जीवन जीने के लिए कहती है। वह कहती हैं कि चित्तौड़ इन उत्सवों का आदी नहीं है। यह शूरवीरों की भूमि है और यहाँ का त्योहार आत्म-बलिदान है।

बच्चो ! अब हम एकांकी को पृष्ठ संख्या १० से पढ़ना व समझना आरंभ करते हैं। सोना के जाते ही पन्ना मनन करती है कि आज अंधेरी रात है और इस समय त्योहार मनाया जा रहा है। नगर के सब निवासी नगर में न होकर एक स्थान पर एकत्रित हैं, जिससे सुरक्षा का भी अभाव है। कुँवर उदयसिंह को भी विशेष रूप से बुलाया गया है। यह सोचकर पन्ना चिंतित है। तभी धाय माँ के पुत्र चंदन का प्रवेश होता है। वह माँ से पूछना चाहता है कि इतनी उछल-कूद मचाने वाली, कभी शांत न रहने वाली सोना इतने धीरे-धीरे गुमसुम क्यों जा रही थी? उसे पहले तो इस प्रकार कभी नहीं देखा। चंदन के अनुसार सोना को देखकर ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो ज़हरीला साँप किसी को नुकसान पहुँचाने के लिए फुँफकारता है परन्तु जब उसके अंदर से ज़हर निकाल दिया जाता है तो उसे महसूस होता है कि अब उसके पास ज़हर नहीं है अर्थात् उसके पास किसी को नुकसान पहुंचाने की शक्ति नहीं है। साँप को जब यह अहसास हो जाता है तो वह फुँफकार मारना छोड़ देता है। इसी प्रकार सोना

जा रही थी मानो उसके अंदर भी शक्ति नहीं रह गई थी। जिससे वह किसी का अहित कर सके।

चंदन अपनी माँ से कहता है कि सोना ज़हरीली है क्योंकि उसकी बातें लोगों के हृदय को बहुत चोट पहुँचाती हैं। आज इतनी कविता बनाने वाली, इतने गीत गाने व नाचने वाली, हमेशा उछलती, कूदती रहने वाली सोना को चुपचाप जाते देख चंदन के मन में शंका होती है। जिस प्रकार पैर में चोट आने पर व्यक्ति धीरे-धीरे चलता है, उसी प्रकार सोना को चुपचाप धीरे-धीरे जाते देख चंदन को लगता है कि उसके पैर में शायद मोच आ गई है।

पन्ना, चंदन को बताती है कि वह (सोना) कुँवर उदयसिंह को दीपदान के उत्सव में बुलाने के लिए आई थी। मैंने कुँवर को जाने नहीं दिया तो वह बुरा मान कर चली गई।

चंदन माँ से कहता है कि आजकल कुँवर बहुत बदल गए हैं। हमारे साथ खेलते भी नहीं। सोना के साथ ही अधिक समय बिताते हैं। चंदन भोला है। वह इस बात को नहीं समझ पाता कि क्यों वे एक-दूसरे को देखते रहते हैं, क्यों उन्हें एक दूसरे का सामीप्य अच्छा लगता है। पन्ना अपने भोले पुत्र को बुरी बातें नहीं बताना चाहती इसलिए वह उसे कहती है कि वह कुँवर को समझा देंगी कि वह सोना के नहीं, भगवान के दर्शन किया करे क्योंकि भगवान के दर्शन करने से मनुष्य को आत्मिक शांति मिलती है। चंदन के अनुसार यदि कुँवर उसे (सोना को) नहीं देखेंगे तो सोना बुरा मान जाएगी।

पन्ना, चंदन की बात का उत्तर देते हुए कहती है कि लोग यदि बुरा मानेंगे भी तो हमारा क्या बिगाड़ लेंगे लेकिन भगवान हमसे बुरा नहीं मानने चाहिए अर्थात हमें सदा अच्छे कार्य करने चाहिए ताकि ईश्वर हमसे प्रसन्न रहें।

पन्ना जानना चाहती है कि कहीं उसका पुत्र किसी के प्रति आसक्त तो नहीं है। चंदन माँ के पूछने पर बताता है कि वह पहाड़ी खरगोश को देखता रहता है। उसकी स्फूर्ति पर वह आसक्त है। जिस प्रकार बिजली एकदम चमकती है, फिर गायब हो जाती है उसी प्रकार पहाड़ी खरगोश फुर्ती से क्षण में ही एक पहाड़ की चोटी से दूसरे पहाड़ की चोटी पर पहुँच जाता है। चंदन के लिए पहाड़ी खरगोश से बढ़कर कुछ नहीं है। पहाड़ी खरगोश को देखकर किसी और को देखने की इच्छा नहीं होती। पन्ना उसे पहाड़ी खरगोश का ही उदाहरण देते हुए समझाती है कि वीरों को भी पहाड़ी खरगोश की तरह फुर्ती से धावा करना चाहिए ताकि कोई शत्रु उसे नुकसान न पहुँचा सके। चंदन चाहता है कि वह इतना तेज़ दौड़े कि ज़मीन से आसमान तक पलभर में पहुँच जाऊँगा। पन्ना अपने पुत्र चन्दन को वीर तो बनाना चाहती है लेकिन अधिक महत्त्वकांक्षी होने को वह बुरा समझती है इसलिए वह उसे समझाती है कि इतनी ऊँचाई तक कोई नहीं दौड़ सकता अर्थात् इतनी आशा न रखो जो संभव ही न हों।

पन्ना उससे पूछती है कि तुम नाच देखने नहीं गए थे? माँ की इस बात का उत्तर देते हुए चंदन कहता है कि वीरों को नाच देखने का शौक नहीं होता। कुँवर के बारे में पूछने पर पन्ना चंदन को बताती है कि कुँवर खेलकर बिना भोजन किए ही सो गए हैं। पन्ना उसे भोजन करने को कहती है कि सज्जा तुम्हें अच्छी-अच्छी बातें सुनाती हुई भोजन करवा देगी, मैं तुम्हारी टूटी माला को ठीक करके आती हूँ। चंदन अपनी माँ से कुँवर की माला को भी ठीक करने के लिए कहता है, जिसे सोना ने पकड़कर खींच दिया था।

बच्चो! अब मैं आपसे कुछ प्रश्न पूछूँगी। प्रश्न

सुनकर आप अपनी ऑडियो को तीन मिनट के लिए रोककर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखेंगे। प्रश्न इस प्रकार हैं :-

प्रश्न 1. चंदन अपनी माँ से किसके बारे में बात कर रहा था ? वह यहाँ क्यों आई थी ?

प्रश्न 2. चंदन को सोना क्यों पसंद नहीं थी ?

प्रश्न 3. सोना को चुपचाप जाते देख चंदन को कैसा लगता है ?

बच्चो ! उत्तर लिखने के लिए दिया गया समय अब समाप्त हो चुका है। आशा है कि आपने पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिख लिए होंगे। उन प्रश्नों के उत्तर इस प्रकार हैं :-

उत्तर 1. चन्दन रावल सरूपसिंह की लड़की सोना के बारे में बात कर रहा है। सोना कुँवर उदयसिंह को उत्सव में भाग लेने और रात में दीपदान की शोभा दिखाने के लिए बुलाने आई थी।

उत्तर 2. चंदन को सोना नापसंद इसलिए थी क्योंकि वह कुँवर को नाच-गान में लगाए रखती थी जिसके कारण कुँवर उनके साथ नहीं खेलते। उसने ही कुँवर को रूठना सिखाया था।

उत्तर 3. सोना जो हमेशा उछलती-कूदती रहती है उसे चुपचाप धीरे-धीरे जाते देख चंदन को लगता है कि उसके पैर में शायद मोच आ गई है।

बच्चो ! अब एकांकी को आगे पढ़ना व समझना आरंभ करते हैं। चंदन के चले जाने के बाद पन्ना अपने पुत्र की भोली बातें दोहराते हुए हँसती है तो दूसरी तरफ़ चंदन की वीरता से भरी बातें सोच कर गर्व भी महसूस करती है।

चंदन के जाने के बाद सामली शीघ्रता से कक्ष में प्रवेश करती है। सामली की आयु अट्ठाईस वर्ष है। वह पन्ना

की विश्वासपात्र परिचारिका है। वह बहुत वफ़ादार है।
सामली पन्ना को बताती है कि कुँवर के प्राण संकट में हैं। सामली मेवाड़ की परिस्थितियों को सोचकर बहुत दुःखी है। वह पन्ना से पूछती है कि क्या चित्तौड़ के यश का इसी प्रकार अंत होगा? वह चित्तौड़ की स्थानीय देवी तुलजा भवानी से निवेदन करते हुए कहती है कि तुम चित्तौड़ की देवी होकर चित्तौड़ की रक्षा नहीं कर रही हो। इसका अर्थ यह समझूँ कि चित्तौड़ की आराध्य अब कमज़ोर हो गई है। तुमने चित्तौड़ को उसके भाग्य पर छोड़ दिया है। वह (सामली) मेवाड़ के दुर्भाग्य को सोचकर बिलख रही है। वह पन्ना से कुँवर के बारे में पूछती है। पन्ना सामली को बताती है कि कुँवर जी भीतर सो रहे हैं। कुँवर जी के शांति से अपने कक्ष में सोने की बात सुनकर सामली को शांति मिलती है। सामली पन्ना को बौखलाने का कारण बताती है कि बनवीर ने अवसर पाकर सोए महाराणा विक्रमादित्य (कुँवर उदय सिंह के बड़े भाई) की छाती में तलवार घोंप दी है। सामली की यह बात सुनकर पन्ना को अपनी सारी आशंकाएँ सच होती साबित हो रही हैं। सामली ने बताया कि बनवीर द्वारा आज नाच-गान का उत्सव इसीलिए मनाया जा रहा है, जिससे नगर निवासी उसमें खो जाएँ, किसी का ध्यान बनवीर की ओर न जाए। मौका पाकर वह (बनवीर) राजमहल में गया। अंतःपुर में तो वह पहले से ही आता-जाता रहता था इसलिए उसे किसी ने नहीं रोका। इस भरोसे का उसने फायदा उठाया और महाराणा के कमरे में जाकर उनकी हत्या कर दी। अर्थात् बनवीर ने राजसिंहासन पाने के लिए पहले महाराणा विक्रमादित्य की हत्या कर दी अब वह कुँवर उदय सिंह को मारना चाहता है ताकि वह चित्तौड़ पर राज्य कर सके।

पन्ना सामली को बताती है कि आज उसे कुसमय नाच - रंग की बात को सुनकर ही शंका हो गई थी कि अवश्य कोई षड़यन्त्र रचा जा रहा है। यदि कुँवर वहाँ जाते तो बनवीर अपने सैनिकों की सहायता लेकर कुँवर को मार डालता इसलिए पन्ना ने कुँवर को उत्सव में जाने से रोक लिया था।

बच्चो ! आज हम अपनी इस एकांकी को यहीं विराम देते हैं। आशा करती हूँ कि आज हमने एकांकी को जितना भी पढ़ा है ,आपको समझ आ गया होगा। सभी छात्र इस एकांकी को पृष्ठ संख्या १३ तक पुनः पढ़ेंगे एवं समझेंगे। सभी छात्र गृहकार्य के रूप में दिए प्रश्नों को पाठ की सहायता से स्वयं करने का प्रयास भी करेंगे।

गृहकार्य

निम्नलिखित अवतरण पर आधारित प्रश्नों के उत्तर लिखो :-
"विलासी और अत्याचारी राजा कभी निष्कंटक राज्य नहीं कर सकता।"

प्रश्न (क) वक्ता और श्रोता कौन - कौन हैं ? परिचय दीजिए और कथन का संदर्भ स्पष्ट कीजिए।

प्रश्न (ख) विलासी और अत्याचारी राजा से किसकी ओर संकेत किया गया है ? ऐसे व्यक्ति को राजगद्दी पर क्यों बिठाया गया था ?

प्रश्न (ग) उसने अपनी इच्छा को पूरी करने के लिए कौन - सी चाल चली ?

प्रश्न (घ) 'निष्कंटक' का क्या अर्थ है ? यह शब्द किसके संदर्भ में और क्यों प्रयोग किया गया है ?

धन्यवाद।